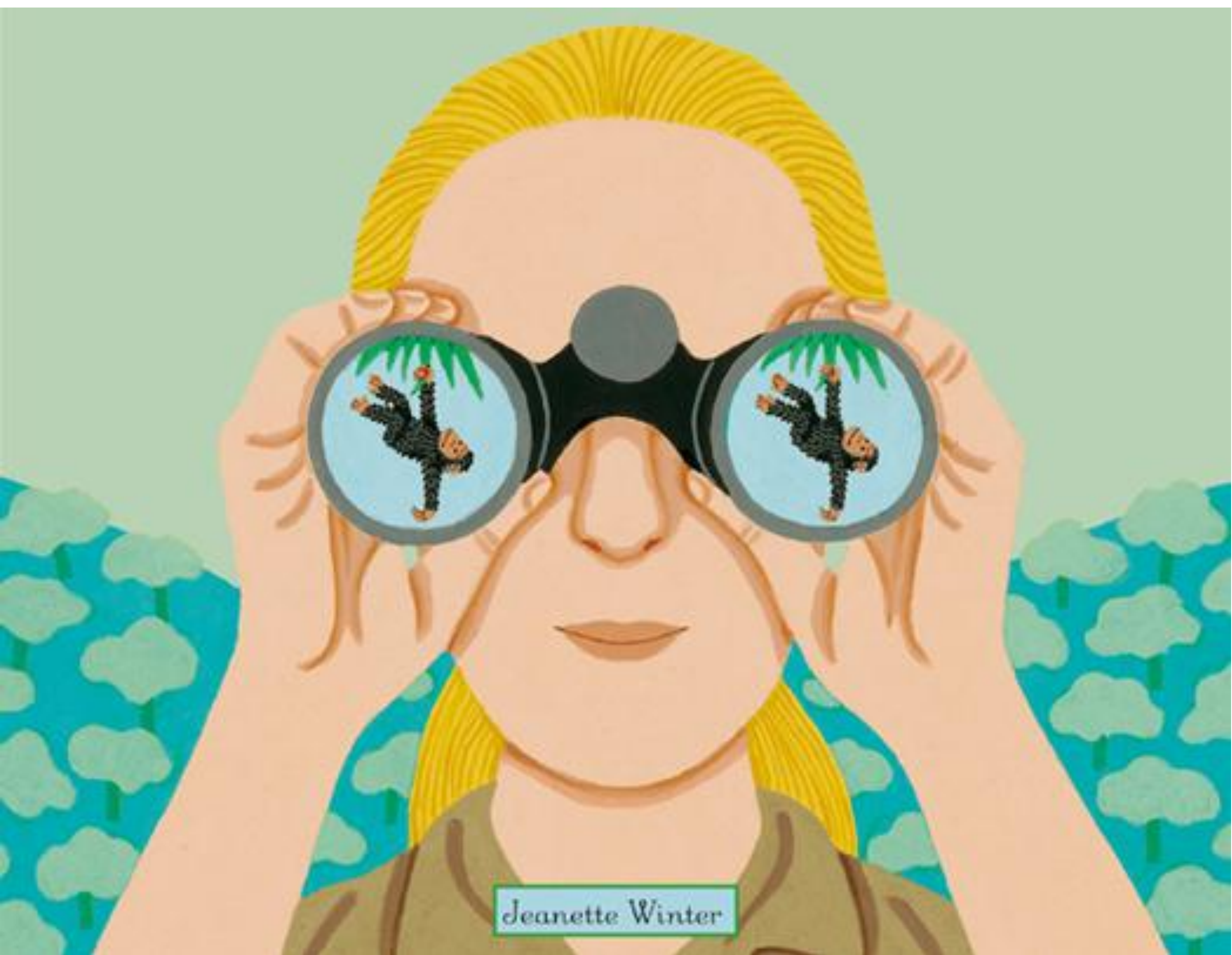
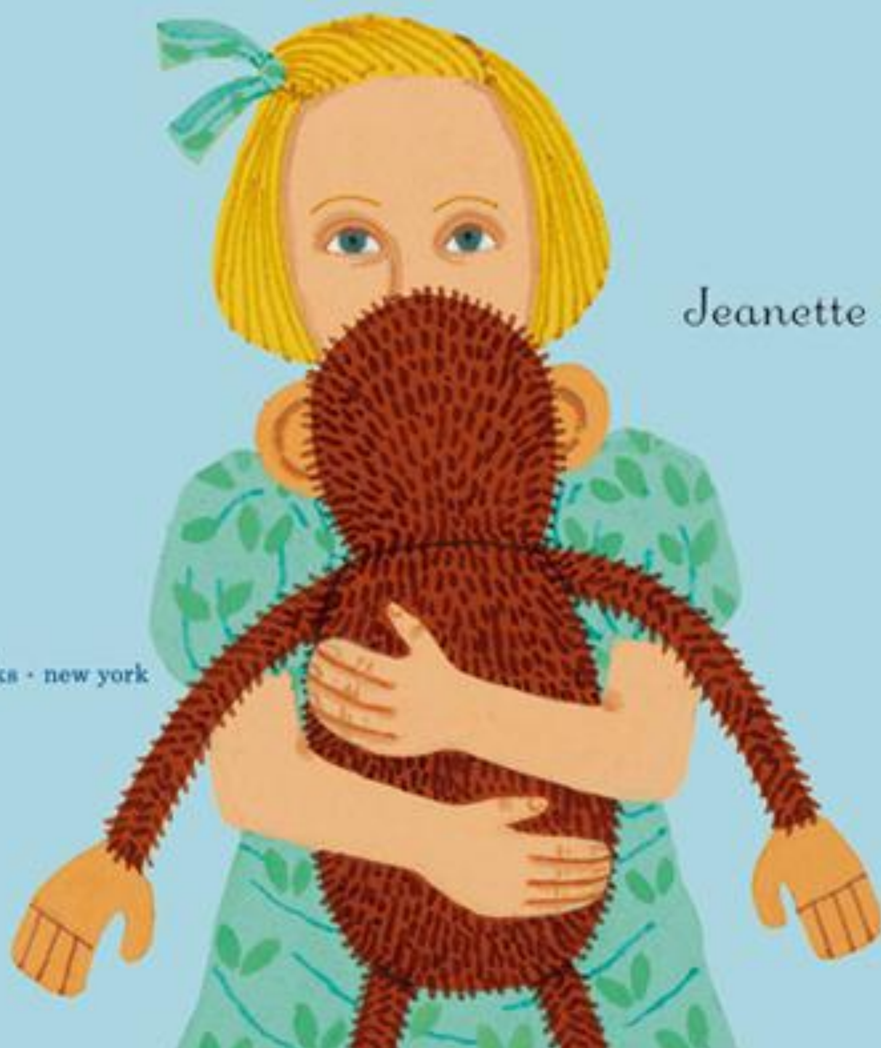
वह सब कुछ देखती थी

जेनेट विंटर





Jeanette Winter

schwartz & wade books · new york





रॉजर के लिए



“जेन, जेन, तुम कहां हो?”

“जेन क्या तुम मुझे सुन सकती हो?”

सब लोग बहुत देर से उसे ढूंढ रहे थे...

वैलेरी जेन गुडऑल को.



तभी, मुर्गियों के घर से जेन दौड़ती हुई बाहर आई

और अपनी मम्मी से जोर से बोली-

"मुझे पता है अंडा कैसे निकलता है!"

पांच साल की उम्र में ही जेन सब कुछ गौर से देखती थी.



जेन अपने आस-पास के सारे जानवरों को गौर से देखती थी,

बड़े और छोटे-

केंचुए, कीड़े, पक्षी, बिल्लियां, कुत्ते और घोड़े.



जेन ने कई दिनों और हफ़्तों तक

एक लाल रॉबिन को अपनी खिड़की पर आते हुए देखा.

उसने उसे और नजदीक से देखा

अपने बिस्तर पर ब्रेड के टुकड़े खाते हुए.

जब वसंत आया, तो रॉबिन ने जेन की किताबों की अलमारी में ही

अपना घोंसला बना लिया!



अपने पसंदीदा करंज के पेड़ में बैठकर जेन कहानियां पढ़ती थी...

जानवरों से बातें करते हुए डॉक्टर डूलिटिल.

अफ्रीका के वानरों के साथ रहता हुआ टार्ज़न.

वह भी अफ्रीका जाना चाहती थी,

जानवरों से बात करने,

वानरों के साथ रहने.



जब जेन ने स्कूल की पढाई पूरी कर ली

तो वह काम करके पैसे कमाने लगी

ताकि वह केन्या का टिकट खरीद सके.

वह अपने पैसे रेस्तरां की चटाई के नीचे छिपाकर रखती थी.



केन्या के सफ़र में, समुद्र पार करते हुए,

जेन जहाज के डेक पर खड़े होकर लहरों को देखती थी,

तब भी जब बहुत ठंडी हवा बहती थी.

उसने समुद्र का नीला और हरा रंग देखा

और पानी के नीचे चमकने वाली मछलियों को.



जहाज से उतरते ही

जेन ने ख़ुशी से अपनी आंखें बंद कर लीं.

वह जानवरों के साथ काम करने के अवसर ढूंढने लगी.



एक मशहूर वैज्ञानिक, लुईस लीकी,

चिम्पान्जियों को देखने और उनपर अध्ययन करने के लिए

किसी को ढूंढ रहे थे.

क्या जेन यह काम करना चाहेगी?

बिल्कुल!



जेन तंजानिया में उस जगह गई

जहां चिम्पांजी रहते थे- गोम्बे.

उसने लिखा *"मैं वह चीजें सीखना चाहती हूं*

जो अब तक किसी को नहीं पता हैं.

मैं कई रहस्य खोलना चाहती हूं..."

उसने अपना कैंप इंसानों की बस्ती से दूर लगाया.

पहली रात, तारों के नीचे,

जेन जंगल की नई आवाजों को सुनते हुए जगी रही-

मेढकों की टर्रर.... झींगुरों की गुनगुन...

लकड़बग्घे की हंसी.... उल्लू की हू..हू...

जेन समझ गई कि यही उसका घर है.





भोर होते ही जेन जंगल के अन्दर गई.

उसे बहुत ऊंचाई पर एक पहाड़ी मिली.

हर दिन वह उस पहाड़ी पर चिम्पान्जियों को ढूंढने जाती थी.

मगर उसे केवल उनकी आवाजें सुनाई देती थीं,

वह दिखते नहीं थे.



जेन पहाड़ी से उतरकर जंगल के अन्दर जाने लगी

इस उम्मीद में कि शायद कोई चिम्पांजी उसके सामने आ जाए.



मगर चिम्पांजी सतर्क थे और वे छिपे रहे.

वे चुप-चाप जेन को देखते रहे.

"मुझे चिम्पांजी कब दिखेंगे?", जेन ने सोचा.



उसके बाद जेन मलेरिया से बीमार पड़ गई.

अपने टेंट में बुखार से जलते हुए

जेन ने चिम्पान्जियों को देखने की उम्मीद लगभग छोड़ दी थी.



जब जेन ठीक हो गई

तो उसने फिर से चिम्पान्जियों के नजदीक जाने की कोशिश की.

कई हफ्ते और महीने गुजर गए,

और एक दिन चिम्पान्जियों ने जेन को खुद को देखने दिया.

वह चुपचाप थोड़ी दूर खड़ी रही,

वह उनसे छुपी नहीं,

उसने उनपर ध्यान नहीं देने का नाटक किया,

और चुपचाप उन्हें देखती रही.



जेन उन्हें हर दिन देखती थी, पूरे दिन भर-

बरसात में उनके साथ घेरे में बैठकर भी.

उसने देखा कि चिम्पांजी बारिश को स्वीकार करते हैं,

वे इंसानों की तरह बारिश से बचने की कोशिश नहीं करते.

और वह यह सब डायरी में लिखती रहती.

उसने लिखा *"अगर तुम जानवरों से सीखना चाहते हो*

तुममें बहुत धैर्य होना चाहिए."



कभी-कभी जेन पहाड़ी पर ही सो जाती थी,

ताकि वह उन पेड़ों के नजदीक रह सके जहां चिम्पांजी सोते थे.

वह भोर होते ही उठ जाती थी ताकि चिम्पान्जियों को उठते हुए देख सके.

चिम्पांजी अपने घोंसलों से उठते, थोड़ी देर बैठते,

और फिर खाना ढूंढने चले जाते.



जेन ने सारे चिम्पान्जियों के नाम रखे.

उसके लिए हर चिम्पांजी अलग था- जैसे हम इंसान होते हैं.

सबसे पहले एक सफ़ेद दाढ़ी वाला चिम्पांजी जेन के पास आया.

जेन ने उसका नाम डेविड ग्रेबियर्ड रखा.

उसने लिखा *"डेविड ग्रेबियर्ड ने मेरे हाथ से केला लिया. हां!*

उसने छीना नहीं. बहुत आराम से लिया."



डेविड ने जेन को अपने नजदीक आने दिया.

जेन ने देखा कि डेविड एक लकड़ी को औजार बनाकर

खाने के लिए दीमकों को खोदकर निकाल रहा है.

इससे पहले किसी को नहीं पता था कि जानवर भी औजार बनाते हैं.

उसने डेविड को मीट खाते हुए देखा.

इससे पहले हर कोई सोचता था कि चिम्पांजी केवल पौधे खाते हैं.



और क्योंकि डेविड को जेन पर भरोसा था

इसलिए बाकी चिम्पान्जियों ने भी जेन को अपने नजदीक आने दिया.



उसने लिखा *"मेरे चारों ओर चिम्पांजी हैं!*

वाह क्या दिन है-

चिम्पांजी नजदीक में, चिम्पांजी दूर भी,

बूढ़े लोग, जवान लोग,

औरतें, बच्चे, नवजात शिशु, किशोर-

पूरा झुण्ड!"



जेन ने चिम्पान्जियों को देखा,

जब वह खुश थे.



उसने उन्हें एक दूसरे का हाथ पकड़ते हुए देखा...



और एक दूसरे को चूमते हुए और गले लगाते हुए,

और हंसते हुए-

बिल्कुल हम इंसानों की तरह.



जेन ने चिम्पान्जियों को देखा

जब वे गुस्सा होते थे या डरे हुए

और तब उनके बाल खड़े हो जाते थे.

उसने उन्हें अकड़ के चलते हुए और चिढ़ते हुए देखा

और तब वह उनके सामने से हट जाती थी.



जेन ने चिम्पान्जियों को काकोम्बे झरने के पास देखा,

गिरते हुए पानी के सामने

बेलों पर ख़ुशी से उछलते और झूलते हुए.



रात में, बीन टमाटर और प्याज की सब्जी खाने के बाद,

मोत्जार्ट और बाक का संगीत सुनते हुए

जेन अपनी डायरी में दिन भर की देखी चीजों के बारे में लिखती थी.

उसके टेंट में इतने सालों से लिखे हुए नोट्स के ढेर पड़े हुए थे.

जेन को मदद चाहिए थी.

इसलिए चिम्पान्जियों को देखने और उनके बारे में लिखने के लिए

जेन की मदद करने कुछ लोग आए.



एक दिन जेन गोम्बे छोड़कर चली गई.



पूरे अफ्रीका में जंगल काटे जा रहे थे

और चिम्पांजी अपना घर खो रहे थे.

शिकारी बड़े चिम्पान्जियों को मार रहे थे

और उनके बच्चों को पकड़ रहे थे-

प्रयोगशालाओं और सर्कस में बेचने के लिए,

और पालतू जानवर बनाने के लिए.



जेन के प्यारे चिम्पांजी ख़त्म होने के खतरे में थे.

उन्हें जेन की मदद की जरुरत थी.



जेन को अपने चिम्पांजी दोस्तों को छोड़ने का बहुत दुःख था

पर उसे पता था कि ऐसा करना जरुरी है.

वह दुनिया भर में कई बड़े शहरों और छोटे कस्बों में गई,

कई महीनों और कई सालों तक,

चिम्पान्जियों और जंगलों को बचाने के लिए मदद मांगने.



जब भी समय मिलता, जेन गोम्बे के जंगलों में वापिस आती थी.

वह पहाड़ी पर चढ़कर जंगल को *"हेलो!"* बोलती.

डेविड ग्रेबियर्ड जेन के साथ-साथ चलता था.



जेन वहां बैठकर अपने चिम्पांजी दोस्तों की आवाजें सुनती थी.



और जब वह चिम्पान्ज़ियों की ओर से बोलने के लिए

इंसानों की दुनिया में लौटती,

तो उसके साथ जंगल की शांति हमेशा रहती थी...



गोम्बे का वह जंगल

जहां वह डॉक्टर डूलिटिल की तरह जानवरों से बातें करती थी

टार्ज़न की तरह निडर होकर चलती थी

सबकुछ गौर से देखती और लिखती थी

और जहां उसने हम सब के लिए

चिम्पान्जियों की दुनिया देखने के लिए खिड़की खोली.






Copyright © STEPHEN ROBINSON
Copyright © STEPHEN ROBINSON

